

**DR.MALA KUMARI  
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST  
TEACHER)  
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY  
A.N.D COLLEGE SHAHPUR  
PATORY,SAMASTIPUR  
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)  
PAPER-4 ,UNIT-7 ,  
THE CONTRIBUTIONS OF ROGERS  
LECTURE – 80**

**रोजर्स का योगदान**

**(THE CONTRIBUTIONS OF ROGERS)**

**LEC-79 का शेष भाग**

- (1) आत्म – संप्रत्यय – आत्म संप्रत्यय में अनुभूतियों के वे सारे पहलू सम्मिलित होते हैं जिसे व्यक्ति चेतन रूप से प्रत्यक्षण करता है | ऐसे अनुभूतियों का प्रत्यक्षण कभी – कभी यथार्थ रूप से नहीं भी हो सकता है | एक बार जैसे ही व्यक्ति का आत्म –संप्रत्यय का निर्माण हो जाता है , उसमें कुछ परिवर्तन अगर असंभव नहीं तो कठिन अवश्य ही हो जाता है | वैसी अनुभूतियाँ जो आत्म – संप्रत्यय के साथ संगत नहीं होती हैं ,उसके अस्तित्व को

व्यक्ति नकार देता है या उसमें विकृति आ जाती है ।  
आत्मन – संप्रत्यय वास्तविक आत्मन या जैविक  
आत्मन से भिन्न होता है |आत्मन संप्रत्यय से तात्पर्य  
मात्र उन अनुभूतियों से होता है जिससे व्यक्ति अवगत  
होता है । परन्तु जैविक आत्मन में वैसी अनुभूतियाँ  
सम्मिलित होती हैं जो व्यक्ति के चेतना से परे होती हैं  
। उदाहरणस्वरूप , एड्रीनल ग्रन्थि जैविक आत्मन का  
हिस्सा है परन्तु जबतक इस ग्रन्थि के कार्य में  
असामान्यता नहीं आती है अर्थात् यह अतिक्रिया या  
न्यूनक्रिया नहीं करता है , यानि व्यक्ति को उसके कार्य  
की गड़बड़ी का अंदाज नहीं होती है , वह आत्म-  
संप्रत्यय का हिस्सा नहीं होता है ।

(ii) आदर्शवादी आत्मन – आत्मन का दूसरा उपतंत्र आदर्शवादी  
आत्मन है जिसमें वैसी सभी अनुभूतियाँ होती हैं जो व्यक्ति की  
भविष्य की इच्छाओं से संबंधित होती हैं |व्यक्ति भविष्य में  
क्या होना चाहता है या उसे क्या करना चाहिए आदि से संबंधित  
विचार आदर्शवादी आत्मन में संकलित होते हैं |आदर्शवादी  
आत्मन तथा प्रत्यक्षात्मक आत्मन में अधिक भेद या अंतर  
होने से व्यक्ति मानसिक रूप से अस्वस्थ हो जाता है ।

(3) प्राणी तथा आत्मन में संबंध – प्रश्न यह उठता है कि आत्मन तथा प्राणी के बीच क्या सम्बन्ध है ? जैसा कि उपर बताया गया है व्यक्ति के आत्मन की उत्पत्ति प्राणी की अनुभूतियाँ से होती है । मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति में वैसी अनुभूतियाँ जिससे आत्मन का निर्माण होता है , प्राणी की अनुभूतियों के अनुकूल होती है । अगर इन दोनों तरह की अनुभूतियों में ताल – मेल या संगठन नहीं होता है , दुश्चिन्ता उत्पन्न होता है तथा व्यक्ति का व्यवहार रक्षात्मक हो जाता है । दो प्रमुख रक्षात्मक व्यवहार है – विकृति तथा नकार (denial) विकृति में व्यक्ति अपनी अनुभूतियों की व्याख्या गलत करता है ताकि यह आत्मसंप्रत्यय के विभिन्न पहलुओं के साथ ठीक बैठ सके। नकार के व्यवहार में प्राणी अनुभूति से अवगत नहीं होना चाहता है । इन दोनों में , विकृति नकार से अधिक सामान्य है । अगर व्यक्ति में चिन्ता की मात्रा अधिक होती है , तो ऐसी स्थिति में रक्षात्मक युक्तियाँ अधिक कार्य नहीं करती है और उसका व्यक्तित्व विधटित हो जाता है । इस तरह के विसंगति की स्थिति में व्यक्ति को मनश्चिकित्सा दी जाती है ।

रोजर्स का कहना है कि आत्म – संप्रत्यय तथा आदर्शवादी आत्मन का सक्रियात्मक रूप से (operationally) क्यू –सार्ट (q

–sort) तथा विषय –विशेषण (content analysis) द्वारा मापन किया जा सकता है ।

(4) आत्म-सिद्धि- आत्म –सिद्धि एक सामान्य संप्रत्यय है जिस पर बहुत सारे मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों ने प्रकाश डाला है । रोजर्स का मत है कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने अनोखे अन्तः शक्ति की पहचान की जन्मजात प्रवृत्ति होती है । इनका मत है कि आत्म –सिद्धि एक ऐसा वर्द्धन बल है जो व्यक्ति की आनुवांशिकता का एक हिस्सा होता है । इसमें न केवल जैविक अन्तः शक्ति निहित होता है बल्कि इसमें मनोवैज्ञानिक वर्द्धन तथा संपोषण एवं उन्नति की प्रवृत्ति भी सम्मिलित होता है । रोजर्स के अनुसार आत्म – सिद्धि की कई विशेषताएँ हैं जिसमें निम्नांकित प्रमुख हैं –

(i) आत्म –सिद्धि धीरे-धीरे सरलता से जटिलता की स्थिति में विकसित होते जाती है । जैसे-जैसे व्यक्ति की अनुभूतियाँ मजबूत होते जाती हैं उसका आत्मन अधिक पुष्ट एवं सिद्ध होते जाता है और इनसे अंततोगत्वा सर्जनात्मकता का विकास होता है । इसका मतलब यह हुआ की ऐसी अनुभूतियों से व्यक्ति अधिक सर्जनात्मक हो जाता है ।

(ii) दूसरा आत्म-सिद्धि एक गत्यात्मक बल है |वैसे व्यक्ति जिसमे आत्म -सिद्धि पर्याप्त मात्रा में होती है ,में हमेशा आगे बढ़ने की प्रवृति होती है |

रोजर्स के आत्मन -सिद्धांत की कुछ आलोचना की गयी है |ऐसा कहा जाता है कि उसके सिद्धांत के अचेतन का महत्व नहीं दिया गया है जो मानव व्यवहार को नियंत्रित करने में एक अहम् भूमिका निभाता है |स्मिथ का कहना है की रोजर्स का यह सिद्धांत बिल्कुल नए ढंग का घटना क्रिया विज्ञान पर आधारित है |इन आलोचनाओं के बावजूद रोजर्स के इस सिद्धांत का परिणाम अच्छा रहा |